अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

SRIJANSHODH2026-49

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार शिक्षण: तीन अध्ययन-प्रसंगों पर आधारित एक गुणात्मक अध्ययन

दिव्या साहू
शोधार्थी, वाद्य विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
प्रो. राजेश शाह
वाद्य विभागाध्यक्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सारांश

यह शोध-पत्र दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण की प्रक्रिया, उससे जुड़ी चुनौतियों तथा उपयोगी शिक्षण-पद्धतियों का अध्ययन करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार-शिक्षण सामान्यतः श्रवण, अनुकरण, अभ्यास और गुरु-निर्देश पर आधारित होता है, किंतु दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में यह प्रक्रिया और भी अधिक संवेदनशील तथा अनुकूल शिक्षण प्रणाली की अपेक्षा करती है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थी सितार कैसे सीखते हैं, शिक्षक उन्हें किस प्रकार मार्गदर्शन देते हैं, तथा कौन-सी शिक्षण-पद्धतियाँ उनके लिए अधिक प्रभावी सिद्ध होती हैं। यह शोध-पत्र तीन अध्ययन-प्रसंगों पर आधारित है। प्रथम अध्ययन-प्रसंग में अनेक अनुभवी सितार-शिक्षकों का दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सिखाने के अनुभवों का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्ययन-प्रसंग में दृष्टिबाधित संगीत-प्राध्यापिका की शिक्षण-परम्परा को उनके गुरु एवं उनकी शिष्याओं के अनुभवों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। तृतीय अध्ययन-प्रसंग में बलूजी श्रीवास्तव के सांगीतिक-जीवन, उनकी शिक्षण-प्रवृत्ति तथा इनर विजन ऑर्केस्ट्रा के माध्यम से दृष्टिबाधित संगीतकारों के लिए निर्मित अवसरों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण में श्रवण, स्पर्श, स्मृति, मौखिक-निर्देश तथा शिक्षक की संवेदनशीलता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह शोध-पत्र इस क्षेत्र में उपलब्ध अनुभवजन्य ज्ञान को सामने लाकर सितार-शिक्षण के एक विशेष पक्ष को समझने में सहायता करता है।

मुख्य शब्द: दृष्टिबाधित विद्यार्थी, सितार-शिक्षण, अनुभवजन्य अध्ययन, शिक्षण-पद्धति, साक्षात्कार-आधारित अध्ययन

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षण-परम्परा में गुरु-शिष्य सम्बन्ध, श्रवण, अनुकरण और निरंतर अभ्यास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। वाद्य-शिक्षण में यह प्रक्रिया सूक्ष्म-अवलोकन, क्रमिक-अभ्यास और अनुभवी-मार्गदर्शन के माध्यम से विकसित होती है। इसी परम्परा का एक विशिष्ट और संवेदनशील विस्तार दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में दिखाई देता है।

सितार-शिक्षण में स्वर, लय, तकनीक और अभिव्यक्ति को क्रमशः विकसित किया जाता है। जब विद्यार्थी दृष्टिबाधित हों, तब यह प्रक्रिया केवल वाद्य-शिक्षण तक सीमित न रहकर एक अधिक संवेदनशील और अनुकूलित शिक्षण-पद्धति का रूप ले लेती है। ऐसे संदर्भ में शिक्षक की स्पष्ट वाणी, धैर्य, स्पर्शात्मक-मार्गदर्शन, श्रवणकेंद्रित अभ्यास और संवेदनशीलता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं ।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए श्रवण, स्मृति, स्पर्श और मौखिक-निर्देश सीखने के प्रमुख माध्यम बन जाते हैं। यहाँ शिक्षक की स्पष्टता, धैर्य और संवेदनशीलता सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती है। इस प्रकार दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण एक तकनीकी अभ्यास के साथ-साथ एक अनुभवजन्य शैक्षिक संवाद भी बन जाता है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण की प्रक्रिया को तीन अध्ययन-प्रसंगों के माध्यम से समझने का प्रयास करता है। प्रथम अध्ययन-प्रसंग में अनुभवी सितार-शिक्षकों द्वारा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सिखाने के अनुभवों का, द्वितीय अध्ययन-प्रसंग में दृष्टिबाधित संगीत-प्राध्यापिका की शिक्षण-परम्परा को, उनके गुरु एवं शिष्यों के अनुभवों के माध्यम से तथा तृतीय अध्ययन-प्रसंग में बलूजी श्रीवास्तव के सांगीतिक-जीवन,उनकी शिक्षण-प्रवृत्ति तथा इनर विजन ऑर्केस्ट्रा के माध्यम से दृष्टिबाधित संगीतकारों के लिए निर्मित अवसरों का अध्ययन किया गया है।

प्रथम अध्ययन-प्रसंग: अनुभवी सितार-शिक्षकों के अनुभव

प्रथम अध्ययन-प्रसंग में उन अनुभवी सितार-शिक्षकों के अनुभवों का अवलोकन किया गया है, जिन्होंने विद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सितार का प्रशिक्षण दिया है।यह जानकारी इन शिक्षकों से लिए गए साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त की गई, साथ ही उनके शिक्षण-कार्य का प्रत्यक्ष निरीक्षण भी किया गया। इस प्रसंग का उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सितार सिखाते समय किन

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL-2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

विशेष तरीकों का उपयोग करते हैं, उन्हें किस प्रकार की चुनौतियाँ दिखाई देती हैं और वे इन चुनौतियों का समाधान कैसे करते हैं।

शिक्षण-पद्धति: स्पर्श और मौखिक-निर्देश की केंद्रीय भूमिका: शिक्षकों के अनुभव से स्पष्ट हुआ कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण में 'स्पर्शात्मक मार्गदर्शन' और 'मौखिक-निर्देश' दोनों की केंद्रीय भूमिका है। वे अपने दैनिक जीवन में भी अनेक वस्तुओं और स्थितियों का अनुमान प्रायः स्पर्श के सहारे ही लगाते हैं, इसलिए सीखने की प्रक्रिया में भी स्पर्श विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है। प्रारम्भिक चरण में शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों के निकट बैठकर उनके हाथों का मार्गदर्शन करते हैं और वादन के समय हाथ की अवस्था, बाँए हाथ की पकड़, तार खींचने की दिशा तथा पर्दों की स्थिति को स्पर्श के माध्यम से स्पष्ट करते हैं; साथ ही वे लगातार बोलकर यह भी बताते रहते हैं कि किस क्रम के पर्दे पर कौन सा स्वर लेना है, कहाँ किस प्रकार का आघात देना है और अंगुलियों को किस ढंग से रखना है। इस प्रकार विद्यार्थी वाद्य की मूल संरचना, तारों का क्रम, स्वरों के स्थान और उनके नाम से परिचित होते हैं। नियमित अभ्यास के साथ-साथ शिक्षक द्वारा बार-बार हाथ की मुद्रा सुधारे जाने और मौखिक रूप से स्वरों के स्थान का पुनः उल्लेख किए जाने पर विद्यार्थियों को स्वरों और पर्दों की पहचान में अपेक्षाकृत कम कठिनाई होती है और वे धीरे-धीरे वाद्य के प्रति अभ्यस्त हो जाते हैं।

शुद्ध स्वरों की संरचना और श्रवण-स्मृति आधारित अधिगम: साक्षात्कारों से यह भी ज्ञात हुआ कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार के पर्दों और स्वरों की समझ में सामान्यतः कोई विशेष बाधा नहीं आती, यदि प्रारम्भिक मार्गदर्शन स्पष्ट और धैर्यपूर्ण हो। शुद्ध स्वरों की पारम्परिक संरचना के संदर्भ में शिक्षकों ने बताया कि मध्यसप्तक के आधार "सा" का पर्दा सातवें स्थान पर होता है और सामान्यतः दो-दो स्वरों के बाद तीसरा पर्दा छोड़ने की व्यवस्था से सात शुद्ध स्वरों का क्रम बनता है। दृष्टिबाधित विद्यार्थी इस क्रम को श्रवण और स्पर्शात्मक स्मृति के सहारे आत्मसात करते हैं; शिक्षक उन्हें बार-बार "सारेगम, रेगमप.." जैसे स्वर-क्रमों को गाकर, बोलकर और बजाकर सुनाते हैं, जिससे स्वरलिपि की मौखिक समझ उनके भीतर धीरे-धीरे दृढ़ हो जाती है। शिक्षकों के अनुसार

अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

दृष्टिबाधित विद्यार्थी ध्वनि के सूक्ष्म अंतर पर विशेष ध्यान देते हैं, इसलिए तानपुरा के साथ सितार को सुर में मिलाने की प्रक्रिया वे प्रायः जल्दी सीख लेते हैं।

लिखित स्वरलिपि और मौखिक परम्परा(संसाधन और चुनौतियाँ): इस अध्ययन-प्रसंग में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी सामने आया कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण में लिखित स्वरलिपि की भूमिका अपेक्षाकृत कम और मौखिक-निर्देश की भूमिका अधिक होती है। स्नातक और परास्नातक स्तर पर संगीत सम्बंधित ब्रेल-पुस्तकें लंबे समय तक अत्यंत सीमित रहीं; परिणामस्वरूप विद्यार्थियों को सैद्धांतिक भाग के प्रश्न-उत्तर, स्वरलिपि तथा ताल-लिपि प्रायः शिक्षक द्वारा श्रुतलेख के रूप में ही प्राप्त होते थे और वही उनके अध्ययन का आधार बनते थे। एक शिक्षक ने बताया कि ताल-लिपि सिखाते समय वे पहले विद्यार्थियों को पूरी ताल, उसके विभाग, सम, ताली, खाली जैसे चिन्हों को मौखिक रूप से स्मरण कराते थे तथा हाथ पर स्पर्श के माध्यम से इन चिन्हों का संकेत करके समझाते थे; जब ताल का ढाँचा स्मृति में स्पष्ट हो जाता था, तब विद्यार्थी उसे ब्रेल-लिपि में स्वयं लिख लेते थे। वर्तमान समय में कुछ संस्थानों में सामान्य मुद्रित पुस्तकों को आवश्यकता पड़ने पर ब्रेल-लिपि में रूपांतरित करने की सुविधा विकसित हुई है तथा देहरादून स्थित राष्ट्रीय संस्थान (National Institute for the Empowerment of Persons with Visual Disabilities – NIEPVD) जैसे केंद्रों पर पाठ्य-पुस्तकों के ऑडियो संस्करण भी उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके बावजूद दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का व्यावहारिक अधिगम अभी भी अधिकतर मौखिक स्वरलिपि, ऑडियो-रिकॉर्डिंग और शिक्षक-निर्देश पर ही आधारित दिखाई देता है, जिससे शिक्षक की वाणी और स्पर्शात्मक मार्गदर्शन उनके लिए मुख्य शिक्षण-स्रोत बन जाते हैं।

दृश्य और स्पर्श (मौखिक शिक्षण-पद्धति): सामान्य विद्यार्थियों के संदर्भ में शिक्षकों ने बताया कि वे प्रायः शिक्षक के सामने बैठकर वादन को देखते हुए सीखते हैं। दृश्य अनुकरण उनके लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन होता है, परंतु दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के साथ यह दृश्यगत प्रक्रिया संभव न होने के कारण शिक्षक स्वयं वही वाद्य उनके हाथों में देकर हाथ की मुद्रा, तारों पर आघात की दिशा और स्वरों के स्थान को स्पर्श तथा मौखिक-निर्देश के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। अधिकांश शिक्षकों और विद्यार्थियों ने साझा किया कि जब शिक्षक हाथ की स्थिति, पकड़, स्वरों की स्पष्टता और अभ्यास की क्रमिकता पर धैर्यपूर्वक ध्यान देते हैं, तब दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सितार सीखने में कोई विशेष बाधा अनुभव नहीं होती और वे अपनी सीखने की प्रक्रिया को सामान्य सांगीतिक-अध्ययन का ही एक रूप मानते हैं। कुछ शिक्षण-परिसरों में किए गए सीमित अवलोकन से यह भी संकेत मिला कि जहाँ विद्यार्थियों की शारीरिक स्थिति और सूक्ष्म तकनीकी त्रुटियों पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता, वहाँ वाद्य-अभ्यास केवल पाठ्यक्रम की पूर्ति तक सीमित रह जाता है तथा संगीत की नींव अपरिपक्व रह जाती है ।

अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL-2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

निष्कर्ष: शिक्षक-समर्थन और संवेदनशील शिक्षण की महत्ता: इन अनुभवों के माध्यम से यह निष्कर्ष निकलता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण की मूल बाधा उनकी सीखने की क्षमता में नहीं, बल्कि शिक्षण-प्रणाली और शिक्षक के समर्थन की गुणवत्ता में निहित है। जब शिक्षक स्वयं संवेदनशील, धैर्यशील और स्पर्शात्मक-मार्गदर्शन के साथ स्पष्ट मौखिक-निर्देश को अपनाते हैं, तब दृष्टिबाधित विद्यार्थी सितार को लगभग उतनी ही सहजता से सीखते हैं, जितना सामान्य विद्यार्थी प्रतिरूपण के माध्यम से सीखते हैं। प्रथम अध्ययन-प्रसंग इस बात को रेखांकित करता है कि सितार-शिक्षण में श्रवण, स्पर्श, मौखिक स्वरलिपि और शिक्षक की संवेदनशील उपस्थिति मिलकर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए एक प्रभावी और मानवीय शिक्षण-परम्परा का निर्माण कर सकती है।

द्वितीय अध्ययन-प्रसंग: दृष्टिबाधित संगीत-प्राध्यापिका की शिक्षण-परम्परा और शिष्यों के अनुभव

द्वितीय अध्ययन-प्रसंग में एक दृष्टिबाधित संगीत-प्राध्यापिका डॉ. ऋचा शर्मा की शिक्षण-परम्परा का अध्ययन किया गया हैं, जिन्होंने पाणिनी कन्या महाविद्यालय तथा जीवन ज्योति अंध विद्यालय में बतौर शिक्षिका, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अतिथि प्राध्यापक के रूप में एवं 2010 में सहायक आचार्या के पद पर वादन अनुभाग, महिला महाविद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया था। यह अध्ययन-प्रसंग विशेष रूप से इस प्रश्न पर केन्द्रित है कि स्वयं दृष्टिबाधित शिक्षिका ने सितार-शिक्षण में किन शिक्षण-सिद्धांतों को महत्वपूर्ण माना और शिष्यों के अनुभवों में उनकी शिक्षण-पद्धति कैसे अभिव्यक्त हुई। चूँकि प्राध्यापिका अब इस संसार में नहीं हैं, अतः उनके शिक्षण-कार्य का विश्लेषण मुख्यतः उनके गुरु, शिष्यों से प्राप्त मौखिक-साक्षात्कार, लिखित-प्रतिक्रियाओं तथा उपलब्ध सीमित अवलोकनों पर आधारित हैं।

अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL-2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

शिक्षण-सिद्धांत और पद्धति: शिष्यों के अनुभवों से यह स्पष्ट हुआ कि डॉ. ऋचा शर्मा स्वयं दृश्य अनुकरण पर निर्भर न होकर श्रवण, स्पर्श और स्मृति को मुख्य शिक्षण-माध्यम के रूप में अपनाती थीं। वे बैठने की मुद्रा, वाद्य पकड़ने का ढंग, दाएँ-बाँए हाथ की स्थिति तथा तारों पर आघात की दिशा को धैर्यपूर्वक समझाती थीं और विद्यार्थियों से यह अपेक्षा रखती थीं कि वे अपनी वर्तमान स्थिति का मौखिक वर्णन स्वयं करें।

श्रवण-संवेदनशीलता और कक्षा-प्रबंधन: डॉ. ऋचा शर्मा की श्रवण-संवेदनशीलता अत्यंत विकसित थी। वे कक्षा में प्रवेश के समय ध्वनि-संकेतों और निर्धारित आसन-स्थितियों से ही पहचान लेती थीं कि कौन सा विद्यार्थी उपस्थित है या किस विद्यार्थी द्वारा सितार वादन किया जा रहा है। वे ताल-लिपि, स्वर-क्रम और रचना को स्मरण-शक्ति एवं मौखिक पुनरावृत्ति के माध्यम से सरल उदाहरणों द्वारा समझाती थीं, जिससे सैद्धांतिक ज्ञान कार्यानुभव के निकट आ जाता था। किसी नई रचना को सिखाने से पूर्व वे उसका स्वरलिपिक क्रम, प्रयुक्त राग के स्वर-सम्बंध और ताल का ढाँचा विद्यार्थियों को सुनाकर स्पष्ट करतीं, फिर उनसे वही क्रम मौखिक रूप से पुनरावृत्त करने के लिए कहतीं और अंततः वादन में अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती थीं । इस पद्धति से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की स्वर, ताल और रचना-सम्बंधी समझ अधिक स्थायी एवं सुव्यवस्थित रूप से विकसित होती थी।

शैक्षणिक उत्कृष्टता में गुरु एवं माता का योगदान: गुरु-शिष्य परम्परा के संदर्भ में शिष्यों ने बताया कि प्रो. राजेश शाह (पूर्व संकाय प्रमुख एवं वर्तमान वाद्य विभागाध्यक्ष, संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के मार्गदर्शन में डॉ. ऋचा शर्मा ने सितार की विधिवत शिक्षा प्राप्त की, जिन्होंने न केवल उनकी सांगीतिक-शिक्षा में उन्हें मार्गदर्शन दिया, अपितु उन्हें पुनः संस्थागत शिक्षा और उच्च शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए निरंतर प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त किए और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से वर्ष 2009 में संगीत विषय में पी.एच.डी. की उपाधि अर्जित की। ब्रेल अध्ययन-सामग्री की सीमित उपलब्धता के समय उनकी माँ ने पाठ्य-सामग्री को श्रवण-सहायक वाचन करने से लेकर वादन-प्रस्तुतियों, संगोष्ठियों, और शोध-पत्र वाचन तक, हर शैक्षणिक एवं कलात्मक गतिविधि में सहयोग दिया। उनका सहयोग प्रारंभिक प्रशिक्षण से लेकर संस्थानों में शिक्षण तक, हर चरण में एक निरंतर सहायक शक्ति के रूप में कार्यरत रहा ।

निष्कर्ष: इस अध्ययन-प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि दृष्टिबाधित शिक्षक की शैक्षणिक क्षमता न सिर्फ़ प्रेरणात्मक, वरन् एक सशक्त शैक्षणिक संवेदनशीलता का भी स्रोत हो सकती है। इनकी शिक्षण-परम्परा में श्रवण, स्पर्श, स्मृति और संवेदनशील मौखिक संवाद का जो सामंजस्य परिलक्षित होता है, वह दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण की एक प्रभावी रूप-रेखा प्रस्तुत करता है।

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

तृतीय अध्ययन-प्रसंग: बलूजी श्रीवास्तव की शिक्षण-प्रवृत्ति और इनर विजन ऑर्केस्ट्रा

इस अध्ययन के लिए प्राथमिक आँकड़े, बलूजी श्रीवास्तव द्वारा पूर्ण की गई प्रश्नावली-आधारित साक्षात्कार प्रतिक्रियाओं से संग्रहित किए गए हैं। इसी डेटा के आधार पर तृतीय अध्ययन-प्रसंग में वरिष्ठ सितार वादक बलूजी श्रीवास्तव की शिक्षण-प्रवृत्ति तथा दृष्टिबाधित संगीतकारों के लिए निर्मित अवसरों का अध्ययन किया गया है। बलूजी श्रीवास्तव स्वयं दृष्टिबाधित हैं और लंबे समय से सितार वादन, शिक्षण और मंच-प्रस्तुति के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। वे इनर विजन ऑर्केस्ट्रा और बलूजी म्यूज़िक फ़ाउंडेशन के संस्थापक हैं, जिसका उद्देश्य दृष्टिबाधित संगीतकारों को प्रदर्शन और आजीविका के अवसर प्रदान करना है। इस अध्ययन-प्रसंग का उद्देश्य यह समझना है कि एक दृष्टिबाधित शिक्षक और कलाकार के रूप में उन्होंने सितार-शिक्षण और मंच-अनुभव को कैसे आत्मसात किया और कैसे दृष्टिबाधित संगीतकारों के लिए कई ऐसे अवसर सृजित किये, जो उनके लिए केवल प्रदर्शन ही नहीं बल्कि आत्मविश्वास, पहचान और सम्मान का माध्यम भी बना।

एकीकृत कक्षा और संवेदनशील शिक्षण: बलूजी श्रीवास्तव दृष्टिबाधित और दृष्टि-सम्पन्न विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से शिक्षण प्रदान करते हैं। उनके अनुसार, ऐसी एकीकृत कक्षा में शिक्षक को निर्देशों की अत्यंत स्पष्ट और संरचित प्रस्तुति करनी चाहिए और दृष्टिबाधित विद्यार्थी को वाद्य की अवस्था, बैठने का ढंग या हाथ की पकड़ समझाते समय केवल मौखिक व्याख्या ही नहीं, बल्कि विद्यार्थी की सहमति लेकर स्पर्शात्मक मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में स्पर्श, मात्र तकनीकी सुधार का साधन नहीं बल्कि एक संवेदनशील शैक्षिक संवाद का अंग बन जाता है। बलूजी श्रीवास्तव इस बात पर ज़ोर देते हैं कि शिक्षक को दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को 'चुनौतीपूर्ण' या 'समस्याग्रस्त' न समझते हुए उन्हें उनकी श्रवण-क्षमता और उनकी योग्यता के आधार पर स्वीकार करना चाहिए। अक्सर देखा गया है कि दृष्टि-सम्पन्न विद्यार्थी कक्षा में अधिक सक्रिय भूमिका निभाते हैं, जबकि दृष्टिबाधित विद्यार्थी आंतरिक संकोच के कारण पीछे रह सकते हैं। ऐसे संदर्भ में शिक्षक की भूमिका केवल सांगीतिक-शिक्षा देने तक सीमित नहीं रहती; वह एक सहायक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं जो सुनिश्चित

करता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को भी कक्षा में समान भागीदारी, आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति का अवसर मिले।

व्यावहारिक शिक्षण व रचनाओं का प्रशिक्षण: बलूजी श्रीवास्तव की शैक्षणिक पद्धति में श्रवण-आधारित मूल्यांकन का एक केंद्रीय स्थान है। यद्यपि दृष्टि-सम्पन्न विद्यार्थी मुद्रा और तकनीक का अवलोकन कर लेते हैं, किंतु वे अक्सर अपने वादन की शुद्धता हेतु शिक्षक से मौखिक पुष्टि चाहते हैं। अतः बलूजी श्रीवास्तव स्वरों की शुद्धता, ताल की स्थिरता तथा तकनीकी सटीकता का आकलन मुख्यतः श्रवण के माध्यम से करते हैं और आवश्यक संशोधन हेतु मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। नई रचनाओं के प्रशिक्षण में वे ताल की समझ विकसित करने के लिए हाथ की थाप, स्वर-ताल का अनुकरण और तबले के व्यवस्थित श्रवण-अभ्यासों का प्रयोग करते हैं। वे विद्यार्थियों को रचनाओं का श्रवणात्मक अभिलेखन करने की सलाह देते हैं और जिनके पास ब्रेल उपकरण उपलब्ध हों वे जानकारी ब्रेल में भी सुरक्षित रख सकते हैं।

इनर विजन ऑर्केस्ट्रा और बलूजी म्यूज़िक फ़ाउंडेशन: बलूजी श्रीवास्तव ने इनकी स्थापना इस उद्देश्य से की, कि दृष्टिबाधित संगीतकारों को प्रदर्शन और आजीविका के अवसर मिल सकें। उनके शोध 'Blind To The Facts' ने इन बाधाओं को उजागर किया और ऑर्केस्ट्रा की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। इस पहल के माध्यम से वे दृष्टिबाधित संगीतकारों को ऐसा मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जो उन्हें सांगीतिक क्षेत्र की संभावनाओं से अवगत कराए और आयोजकों, प्रसारण संस्थानों आदि से जोड़ सके। इन्होंने इनर विजन ऑर्केस्ट्रा के माध्यम से कई संगीतकारों के व्यावसायिक और कलात्मक विकास को प्रत्यक्ष रूप से देखा है। उदाहरणस्वरूप 'ताकाशी किकुची' जो पाश्चात्य संगीत में प्रशिक्षित एक उत्कृष्ट वायला वादक हैं, उन्होंने ऑर्केस्ट्रा के साथ कार्य के दौरान अपने कौशल में उपज का समावेश किया और रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास किया, जिससे उन्हें नृत्य, रंगमंच और

अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL-2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

स्टूडियो कार्य जैसे विविध क्षेत्रों में सहभागिता का अवसर मिला। इसी प्रकार ईरानी गायिका 'फेरेश्ते खोस्रोजेर्दी' ने ऑर्केस्ट्रा में शामिल होने के बाद कम समय में पर्याप्त आत्मविश्वास अर्जित किया, जिससे उन्हें BBC द्वारा विश्व की प्रमुख 100 महिलाओं में स्थान मिलने जैसी मान्यता प्राप्त हुई।

भविष्य की दिशा और सामाजिक प्रभाव: बलूजी श्रीवास्तव भविष्य में 'इनर विजन यूथ ऑर्केस्ट्रा' विकसित करने की योजना बना रहे हैं, जिसका उद्देश्य आगामी प्रतिभा को प्रोत्साहित करना और दृष्टिबाधित संगीतकारों को संगीत के व्यावसायिक क्षेत्र में शामिल करना है। यह पहल उन्हें विभिन्न अनुभवों से परिचित कराएगी और समाज में स्वयं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में सहायक होगी। इनके शैक्षणिक और कलात्मक योगदान का प्रभाव केवल उनके विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक परिवर्तन की दिशा में भी कार्यरत है। इनके माध्यम से उनका मूल उद्देश्य है— **'दृष्टिबाधित संगीतकारों को न केवल प्रदर्शन के अवसर देना, बल्कि उन्हें एक सम्मानजनक आजीविका और सामाजिक पहचान प्रदान करना'**। इस प्रकार, बलूजी श्रीवास्तव का कार्य केवल सांगीतिक-शिक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल के रूप में भी देखा जा सकता है।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण की प्रक्रिया का गुणात्मक एवं अनुभवजन्य अध्ययन तीन अध्ययन-प्रसंगों के माध्यम से किया गया है।

डेटा-संग्रहण

अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL-2
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

अर्ध-संरचित साक्षात्कार— प्रथम अध्ययन-प्रसंग में अनुभवी शिक्षकों से, द्वितीय अध्ययन-प्रसंग मे डॉ.ऋचा शर्मा के गुरू व उनके शिष्यों से और तृतीय अध्ययन-प्रसंग में बलूजी श्रीवास्तव से प्रश्नावली आधारित साक्षात्कार।

प्रत्यक्ष अवलोकन — सीमित शिक्षण-परिसरों में शिक्षकों के कार्य का निरीक्षण।

लिखित प्रतिक्रियाएँ — शिष्यों द्वारा प्रदान किए गए अनुभव-विवरण।

विश्लेषण और चर्चा

तीनों अध्ययन-प्रसंगों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण मुख्यतः स्पर्श, श्रवण, स्मृति और मौखिक-निर्देश पर आधारित एक विशिष्ट शिक्षण-प्रक्रिया है। तीनों प्रसंगों में स्पर्शात्मक मार्गदर्शन की केंद्रीय भूमिका उभरकर सामने आती है, जो वादन-मुद्रा, हाथों की अवस्था और तकनीकी शुद्धता के विकास में सहायक है। मौखिक-निर्देश और श्रवणात्मक अधिगम दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ना केवल सहायक, बल्कि शिक्षण की मूल आधार-रचना के रूप में कार्य करते हैं। अंतिम अध्ययन-प्रसंग यह संकेत करता है कि एकीकृत कक्षाएँ समावेशी सांगीतिक-शिक्षा की प्रभावी संभावना प्रस्तुत करती हैं, जहाँ दृष्टिबाधित और दृष्टि-सम्पन्न विद्यार्थी साथ सीखते हुए परस्पर संवेदनशीलता भी विकसित करते हैं। अंततः सभी प्रसंगों से यह निष्कर्ष निकलता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण की सफलता का आधार उनकी क्षमता से अधिक शिक्षक की संवेदनशीलता, धैर्य, सामंजस्यता और शिक्षण-पद्धति की स्पष्टता में निहित है।

निष्कर्ष

यह शोध-पत्र दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण से संबंधित कई महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करता हैं, जिसके विश्लेषण से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

प्रथम अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सितार-शिक्षण की प्रक्रिया केवल 'विशेष आवश्यकता' तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय शास्त्रीय संगीत की मौखिक परम्परा का एक स्वाभाविक और सशक्त विस्तार है। श्रवण और स्मृति पर आधारित यह पद्धति न केवल दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए, बल्कि समस्त सांगीतिक-शिक्षा के लिए एक आदर्श रूप प्रस्तुत करती है।

डॉ. ऋचा शर्मा और बलूजी श्रीवास्तव जैसे दृष्टिबाधित शिक्षकों की उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि दृष्टिबाधित व्यक्ति केवल 'शिक्षार्थी' नहीं, बल्कि 'शिक्षक' और 'मार्गदर्शक' भी हो सकते हैं। यह दृष्टिकोण समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता को चुनौती देता है और दृष्टिबाधित कलाकारों के लिए नई संभावनाएँ सृजित करता है।

इनर विजन ऑर्केस्ट्रा जैसे प्रयास यह दर्शाते हैं कि सांगीतिक-शिक्षा के पश्चात मंच-प्रदर्शन, आजीविका और सामाजिक पहचान का प्रश्न उतना ही महत्वपूर्ण है।

अंततः यह शोध-पत्र न केवल शैक्षणिक बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह सुझाव देता है कि भविष्य में सांगीतिक संस्थानों को एकीकृत कक्षाओं, ब्रेल-सामग्री के विकास, ऑडियो-संसाधनों की उपलब्धता और दृष्टिबाधित शिक्षकों की नियुक्ति पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ऐसे प्रयास न केवल दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए, बल्कि समस्त सांगीतिक-शिक्षा प्रणाली के लिए लाभकारी सिद्ध होंगे।

References

- **Baker, D., & Green, L. (2016). Perceptions of schooling, pedagogy and notation in the lives of visually-impaired musicians. *Research Studies in Music Education, 38*(2), 193–219.** https://doi.org/10.1177/1321103X16656990

- **BBC Radio 3. (n.d.). *Music Matters - Baluji Shrivastav, Ziad Sinno, Kevin Satizabal, Victoria Oruwari* [Video]. BalujiMusicFdn.** https://www.balujimusicfoundation.org/

- **Castle, C., Baker, D., Chan, S. H., Tang, E. S. Y., & Baker, A. (2025). "Blind to the facts 2023": Exploring the experiences of professionals with visual impairment in the UK music industry. *Creative Industries Journal, 1–26*.** https://doi.org/10.1080/17510694.2025.2464706

- **Das, M. (n.d.). A blind musician takes the stage with a bold vision. *The Times of India*.** http://toi.in/siAqRZ

- **Jeevan Jyoti Higher Secondary School. (n.d.). *Home - Jeevan Jyoti Higher Secondary School*. Jeevan Jyoti Higher Secondary School - (Inclusive Education).** https://jjinclusive.co.in/

- **Musicplay. (2025, March 4). *Music room accommodation for students who are blind or visually impaired webinar with Soniya Patel* [Video]. YouTube.** https://www.youtube.com/watch?v=apTMDnFMiDA

परिशिष्ट

गूगल फॉर्म्स–आधारित साक्षात्कार प्रश्नावली (बलूजी श्रीवास्तव) – निम्नलिखित प्रश्न गूगल फॉर्म्स के माध्यम से बलूजी श्रीवास्तव से अर्ध-संरचित साक्षात्कार के लिए उपयोग किए गए थे। ये प्रश्न तृतीय अध्ययन-प्रसंग के अंतर्गत उनके शिक्षण-अनुभव, इनर विजन ऑर्केस्ट्रा और दृष्टिबाधित संगीतकारों के लिए सृजित अवसरों को

समझने हेतु तैयार किए गए थे। (यह प्रश्नावली शोधकर्ता द्वारा विकसित की गई थी और गूगल फॉर्म्स के माध्यम से मार्गदर्शित साक्षात्कार प्रक्रिया के भाग के रूप में आयोजित की गई थी।)

चयनित प्रश्न

- Do you usually teach visually impaired and sighted students together in the same class, and if so, A few most important methods or principles you keep in mind for your visually impaired students?
- As a visually impaired teacher working with sighted students, what are the main advantages and challenges you experience in practical teaching, especially with regard to posture, hand position, and sitar technique?
- From your experience, what are the main barriers that musicians with visual impairments still face in accessing serious music training and professional work, and what practical steps do you think teachers and institutions can take to reduce these barriers?
- When you teach a new composition, how do you help your visually impaired students understand the tala and retain or write down what they have learned?
- Could you share one or two short examples of musicians whose professional or personal lives changed significantly through your projects?
- Beyond these organisations, what other contributions have you made such as collaborations, advisory roles, advocacy or work with institutions that you feel have helped improve conditions for visually impaired musicians?Do you look forward to taking any new long-term initiatives to support the next generation of visually impaired musicians, and if so, what kind of directions interests you most?
- Do you look forward to taking any new long-term initiatives to support the next generation of visually impaired musicians, and if so, what kind of directions interests you the most?